Nai Dunia (Indore), 26th December 2021, Page-5

नई शिक्षा नीति में प्रौद्योगिकी पर जोर

विज्ञान सम्मेलन ● आइआइटी इंदौर में बोले केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री डा. सुभाष सरकार

इंदौर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का उद्देश्य नई शिक्षा प्रौद्योगिकी को अपनाना और कौशल विकसित कर नए विषय सीखना है। शिक्षा नीति में प्रौद्योगिकी के उपयोग पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह डिजिटल बुनियादी ढांचे के उचित समर्थन और वर्तमान डिजिटल अंतर को पाटने के साथ आनलाइन सीखने पर जोर देती है।

यह कहना है केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री डा. सुभाष सरकार का। वे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) इंदौर में शनिवार को मध्यप्रदेश विज्ञान सम्मेलन के समापन समारोह में मुख्य अतिथि थे। आयोजन में उच्च शिक्षा विभाग के मंत्री मोहन यादव, विज्ञान भारती के अध्यक्ष विजय पी. भाटकर, विज्ञान भारती के राष्ट्रीय सचिव प्रो. सुधीर एस. भदौरिया, एमपी काउंसिल आफ साइंस एंड टेक्नोलाजी (एमपीसीएसटी) के महानिदेशक डा. अनिल कोठारी, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. रेणु जैन, आइआइटी इंदौर के कार्यवाहक निदेशक प्रो. नीलेश कुमार जैन, प्रो. संतोष विश्वकर्मा और अन्य अधिकारी शामिल हुए। केंद्रीय मंत्री ने आइआइटी इंदौर में हाईटेक भवन, प्रयोगशालाओं, आवासीय परिसर, नर्सरी और केंद्रीय विद्यालय, सेंट्रल डाइनिंग हाल, छात्रावास, मध्यप्रदेश के सबसे बड़े पिलरलेस सभागार, स्वास्थ्य केंद्र, अभिनंदन भवन, लर्निंग रिसोर्स केंद्र और रेडियो आवृत्ति पहचान (आरएफआइडी) केंद्र का उद्घाटन किया। उन्होंने संस्थान में बने केंद्रीय विद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों से भी मुलाकात की।

संबोधित करते केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री डा. सुभाष सरकार। ● सौजन्य : आयोजक

दौरा

- डा. सरकार ने आइआइटी में हाईटेक प्रयोगशाला का उद्घाटन किया
- केंद्रीय विद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों से भी मुलाकात की

'आइआइटी इंदौर कर रहा महत्वपूर्ण काम': डा. सुभाष सरकार ने कहा कि भारत अपने विश्व स्तरीय संस्थानों जैसे नालंदा, विक्रमशिला, तक्षशिला, वल्लभी और अन्य संस्थानों के लिए जाना जाता है। इनमें प्रख्यात विद्वान विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, साहित्य, अर्थशास्त्र, इंजीनियरिंग, खगोल विज्ञान और मानव मूल्यों के साथ वेदों का अभ्यास करते थे। विक्रमशिला शिक्षण संस्थान 100 से ज्यादा शिक्षक और करीब एक हजार विद्यार्थी वाले सबसे बड़े विश्वविद्यालयों में से एक था। इन संस्थानों ने प्रख्यात विद्वानों का निर्माण किया जिन्हें अक्सर विदेशों में शिक्षा, संस्कृति और धर्म के प्रसार के लिए आमंत्रित किया जाता था। इन संस्थानों ने चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, पाणिनि, गार्गी, मैत्रेयी जैसे कई अन्य विद्वानों को तैयार करने में योगदान दिया। इन विद्वानों ने गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, योग, ललित कला, सर्जरी, सिविल इंजीनियरिंग और क्षेत्रों में ज्ञान के विकास के लिए महत्वपूर्ण काम किए हैं। उन्होंने कहा कि आइआइटी इंदौर महत्वपूर्ण काम कर रहा है और प्रौद्योगिकी क्षेत्र की शिक्षा में सबसे तेजी से आगे बढ़ता हुआ संस्थान है।

संगोष्ठी में जलवायु परिवर्तन पर हुई बात

विज्ञान सम्मेलन के तहत शनिवार को मेडिकैप्स विश्वविद्यालय में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि मैपकास्ट के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. मनोज कुमार राठौर ने वर्तमान परिस्थितियों में जलवायु परिवर्तन के कारकों पर जोर दिया। सामाजिक कार्यकर्ता पद्मश्री डा. जनक पलटा ने सौर ऊर्जा और ऊर्जा संरक्षण की जानकारी दी। 50 शोध पत्रों का भी वाचन किया गया। संस्थान के कुलपति डा. दिलीप कुमार पटनायक ने कहा कि भारत का अतीत परंपरागत ज्ञान से परिपूर्ण था और हमेशा रहेगा। प्रो. प्रीति यादव ने संचालन किया। कुलसचिव डा. अंकुर सक्सेना ने आभार माना। डा. प्रीति जैन, डा. संजय जैन, डा. बापट और डा. सुरेश जैन और विद्यार्थी शामिल थे।

विजय पी. भाटकर ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शोध कार्यों पर भी जोर दिया गया है। अब विज्ञान क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण काम हो रहे हैं। एमपीसीएसटी के महानिदेशक डा. कोठारी ने कहा कि हम प्रदेश में विज्ञान, तकनीकी और इनोवेशन पालिसी बनाने पर काम कर रहे हैं। इसमें विज्ञान सम्मेलन में विशेषज्ञों की बातों से सामने आए परिणामों को आधार बनाया जाएगा।